प्रस्तावना

आधुनिक काल में अनेक साहित्यकार हुए जिन्होंने हिन्दी-साहित्य में अप्रतिम काव्य एवं गद्य साहित्य लिखकर हिन्दी-साहित्य की अमूल्य सेवा की है। निराला की गणना प्रथम पंक्ति में की जा सकती है; क्योंकि हिन्दी जगत् में निराला एक उच्चप्रतिष्ठ साहित्यकार के रूप में परिचित हैं।

निराला का लौकिक और साहित्यिक जीवन संघर्षमय रहा। इन संघर्षों में उन्होंने प्रत्येक आघात और प्रत्येक आक्रमण का मुंह-तोड़ उत्तर दिया। निराला की कला में एक निरालापन है। वे एक ही साथ भावुक, चिन्तक, कवि और मनस्वी हैं। निराला की मनोदशा में अनेक परिवर्तन हुए। इसका सबसे बड़ा कारण उनके जीवन का संघर्ष आवर्तन था। उनकी प्राथमिक रचनाओं में कोमल, प्रेम, कल्पना, उत्साह, आनन्द, अपनत्व आदि दिखायी देता है और बाद की रचनाओं में उस समय की स्थिति की कटुता का गहरा तीखापन दिखायी देता है। इनके साहित्य में प्राचीन की अपेक्षा नवीन विचारधाराएं अधिक दिखायी देती हैं।

निराला का गद्य न कोई मोह-भंग है और न कोई विवशता। वह उसकी सृजनशीलता का एक सहज स्वाभाविक माध्यम है। उन्होंने नये भारतीय जागरण तथा सामाजिक उन्मेष को पास से देखा-जाना था और सच्चाई यह है कि उसे वे अपनी चेतना का एक हिस्सा बना सके थे। इस परिप्रेक्ष्य में देखने पर उनकी गद्य-कृतियों में एक जिम्मेदार सामाजिक दृष्टि उजागर होती है।

निराला अपने समय के पिछड़े हुए नारी-वर्ग को ऊंचा उठाने के लिए ही पुरुष-पात्रों की तुलना में नारी-पात्रों को गढ़ने में अधिक संलग्न रहे हैं; मानो कि वे स्त्री-समाज के प्रबल हिमायती हैं। निराला का गद्य उनके जुझारू व्यक्तित्व का सही प्रतिनिधित्व करता है। वे समाज की विसंगतियों पर तीखे आक्रमण करते

करते हैं । पुरातनपंथियों से जूझने में सबसे ज्यादा साहस निराला ने ही दिखाया, इसमें कोई शक नहीं । पात्रों की जिंदगी से सीधे ही पाने और उन्हें हमारे बीच उपस्थित करने में निराला ने उस समय पहल की जब सारा आंदोलन रोमानी था । समाज के सर्वहारा वर्ग को निराला की सहानुभूति मिली है ।

निराला हिन्दी के एक ऐसे साहित्यकार हैं जिनके विषय में सबसे अधिक भ्रांतियां फैली हुई हैं । विरोधी गुणों से संयुक्त उनका व्यक्तित्व लोगों के लिए रहस्यमय बनकर रह गया है । एक गद्यकार के रूप में निराला बहुचर्चित, बहु-प्रशंसित कथाकार हैं । इनके कथा-साहित्य में विभिन्न वर्गों में व्याप्त व्यक्ति की कुंठा और भावनाओं का प्रभावपूर्ण चित्रण मिलता है । अनेक विकृतताओं के बीच में भी मानव किस अटूट आस्था के साथ जीवन-संघर्ष में रत है, इसका विश्वसनीय चित्रण इनके कथा-साहित्य में देखने को मिलता है ।

निराला की गद्य रचनाएं विविधता का परिचय देती हैं । समीक्षा, निबंध, जीवनी, कहानी, उपन्यास, रेखाचित्र आदि कथाकृतियों तथा अन्य गद्य-सर्जनाओं में उनकी दृष्टि कई बार अपने ही रोमानी तेवरों से लड़ती-झगड़ती अधिक यथार्थवादी भूमि पर आना चाहती है । इस प्रकार निराला का गद्य उनके उस अंत-संघर्ष को बताता है जिससे रोमानी बनावट को संघर्ष करना पड़ता है । उनके साहित्य में क्रांतिकारी विचारों की प्रधानता युग का ही सहज प्रभाव था ।

निराला के साहित्य के प्रति सुहृद-प्रेमियों का और ध्यान आकर्षण करने के लिए तथा उनके गद्य-साहित्य के सामाजिक पहलुओं पर समालोचना की भारी कमी को अनुभव करते हुए प्रस्तुत शोध-प्रबंध मेरा एक छोटा-सा अनुसंधानात्मक प्रयास है । यद्यपि इनके व्यक्तित्व को एवं कृतियों को लेकर अब तक बहुत से आलोचनात्मक ग्रंथ लिखे जा चुके हैं किन्तु गद्य में अभिव्यक्त समाज-जीवन के संदर्भ में अब तक कोई भी ठोस कार्य नहीं हो सका है । इस गद्य-साहित्य की विविध विधाओं पर प्रकाश डालना प्रस्तुत शोधकार्य का उद्देश्य है ।

अध्ययन एवं विवेचन-विश्लेषण की दृष्टि से इस शोध-प्रबंध को आठ अध्यायों में विभक्त किया गया है :

प्रथम अध्याय `समाजवाद` में समाजवाद का सामान्य विवेचन किया गया है जिसमें समाजवाद की परिभाषा, तत्व एवं विशेषताएं, आधुनिक समाजवाद, महान समाजवादी-विचारक निराला और यथार्थवाद, भारत और समाजवाद आदि पर विहंगावलोकन प्रस्तुत किया गया है और अंत में निराला के गद्य-साहित्य में समाजवाद एक संक्षिप्त विवेचन है ।

द्वितीय अध्याय `निराला जीवन दर्शन` है जिसके एक भाग में जन्म, शिक्षा, साहित्यिक रचनाकाल, उनका व्यक्तित्व, शरीर-रोग एवं उसका त्याग आदि गुंथा गया है तो दूसरे भाग में संपादक निराला, भूमिकाओं में चिंतन, निराला के प्राक्कथन और समर्पण काव्य क्षेत्र से कथा-साहित्य की ओर प्रयाण आदि पर विचार-विनिमय किया गया है ।

तृतीय अध्याय है `निराला के उपन्यास-साहित्य में सामाजिक चिंतन । इसमें उनके उपन्यास एवं औपन्यासिक रेखाचित्रों का अध्ययन प्रस्तुत किया गया है । `अप्सरा` में वेश्या-पुत्री कनक को अपने जन्म से संबंधित परिस्थितियों के विरुद्ध संघर्ष करना पड़ता है । `अलका` में वर्णित ग्राम-निर्माण कार्य निराला के लोकदर्शन-निरूपण का महत्वपूर्ण अंश है । `निरुपमा` में सुशिक्षिता और सच्चरित्र बंगाली युवती की कथा है जो घर के ही सदस्यों के कुचक्र और षड्यंत्र का शिकार है । `प्रभावती` ऐतिहासिक रोमांस की रचना है । `कुल्लीभाट` और `बिल्लेसुर बकरिहा` में पुरुष-पात्रों की ही प्रधानता है । यथार्थवादी दृष्टिकोण इनमें स्पष्ट दिखाई देता है। कटु-सत्य तथा व्यंग्य में हास्य - इन कृतियों में देखा जा सकता है ।

चतुर्थ अध्याय है `निराला का कहानी-साहित्य : एक समाजवादी प्रेरणा-स्रोत` । इसमें कहानी का सामान्य परिचय, विषय की दृष्टि से विभाजन और निराला की कहानियों का वर्गीकृत विवेचन करते हुए अंत में कहानी-साहित्य का मूल्यांकन किया गया है । प्रस्तुत कहानियों में धर्म, कला, राजनीति, विधवा विवाह,

अछूतोद्धार, वेश्या, पति-पत्नी का प्रेममय जीवन आदि विषयों पर चर्चा की गयी है। `चतुरी चमार` निराला की सर्वश्रेष्ठ कहानी है।

पंचम अध्याय `निराला के निबंध-साहित्य में समाजवादी चिंतन` है। इसमें निराला के निबंध-साहित्य का विहंगावलोकन प्रस्तुत किया गया है। उनका समाज-सुधारक रूप, सामाजिक पराधीनता, वर्तमान हिन्दू समाज, राष्ट्र और नारी आदि निबंधों में प्रकट हुआ है। कला के विरह में जोशी-बंधु तथा साहित्यिक सन्निपात, निबंधों में उनकी सूक्ष्म विवेचना-शक्ति का परिचय तो मिलता है किन्तु साथ ही साहित्यिक आलोचना की व्यक्तित्व-प्रधान व्यंग्यात्मक शैली का भी दर्शन होता है। नाटक समस्या, रचना सौष्ठव एवं भाषा-विज्ञान जैसे निबंधों में निराला ने साहित्यकार, भावों का उदात्तीकरण, भाषा की अनुरूपता एवं परिष्कार पर अपने विचार व्यक्त किये हैं।

षष्ठम अध्याय है `आलोचना`। प्रस्तुत अध्याय में प्रथम आलोचना-साहित्य का संक्षिप्त विवेचन दिया है। `रवीन्द्र कविता कानन` में रवीन्द्रनाथ टैगोर के साहित्य की बारीकियों को बड़ी ही विद्वत्ता और कुशलता के साथ समझाया गया है। `पंत और पल्लव` में पंत के `पल्लव`, संग्रह की कुछ कविताओं पर, `पल्लव` की भूमिका में व्यक्त अनेक विचारों पर और पंत की काव्य-संबंधी मौलिकता तथा सामर्थ्य पर विवेचनात्मक और तुलनात्मक ढंग से विचार किया गया है। आलोचनात्मक साहित्य में चिंतन की सूक्ष्मता, अध्ययन की व्यापकता और निराला का अपना पर्याय अर्थात् निर्भीकता बराबर मिलती है।

सप्तम अध्याय है `निराला का जीवनी-साहित्य (बालकोपयोगी जीवनी-साहित्य)`। निराला ने गद्य-साहित्य में केवल ललित ही नहीं, उपयोगी साहित्य की भी रचना की है। उन्होंने भक्त ध्रुव, भीष्म, महाराणा प्रताप, भक्त प्रह्लाद आदि की जीवनियां लिखकर जीवनी-लेखकों का मार्ग और भी सरल किया।

प्रस्तुत शोध-प्रबंध का अंतिम, अर्थात् अष्टम अध्याय है `निराला के स्फुट गद्य-साहित्य में समाजवाद के दर्शन`; जिसमें प्रथम उनके अनुवाद-साहित्य का

विवेचन किया है । अनुवादक के रूप में निराला की कृतियां सर्वथा उल्लेखनीय हैं । उन्होंने बंकिम के उपन्यासों, रामकृष्ण वचनामृत के तीन भागों, राजयोग, परिव्राजक तथा भारत में विवेकानन्द का अनुवाद प्रस्तुत किया है । अनुवाद-साहित्य उनकी विद्वता का प्रभाव है । पत्र-साहित्य का संक्षिप्त सर्वेक्षण प्रस्तुत किया गया है । महाभारत और रामायण की अन्तर्कथाएं शीर्षक कृतियों का परिचयात्मक विवेचन करते हुए अंत में स्फुट गद्य-साहित्य का मूल्यांकन किया है ।

सामान्यत: किसी भी एक विषय को लेकर जब हम विवेचन या विश्लेषण प्रस्तुत करने बैठते हैं तब उसके साथ हम कहां तक उचित न्याय कर पाते हैं, कहना कठिन है । फिर भी, हर प्रयास अपने-आपमें संपूर्ण प्रयास की नींव होता है । अत: `उपसंहार` में अन्य समकालीन गद्यकारों की तुलना में निराला की अनुपम प्रतिभा, उनके व्यक्तित्व की एक झलक प्रस्तुत करते हुए उनकी संपूर्ण कृतियां किन-किन परिप्रेक्ष्यों में प्रस्तुत होती हुई उन्हें हिन्दी जगत में कितना ऊंचा आसन दिलाने में समर्थ रही हैं - इसपर विस्तृत विवेचन का प्रयास है ।

इसमें कुछ परिशिष्ट भी शामिल किये गये हैं जिनमें `आलोचकों की नजर में`, `निराला के विचारबिंदु`, `निराला की मौलिक गद्य कृतियां` एवं सहायक ग्रंथ-सूची है ।

मेरे उज्ज्वल भविष्य की कामना में जिनकी शुभ चिन्ताएं अनवरत विचरती रहती थीं, जिनके आशीर्वाद का बल मेरे जीवन को ऊर्ध्वमुखी बनाता था, वे पूज्य-पिताजी अब इस संसार में नहीं हैं किन्तु अपने प्रत्येक रचनात्मक क्षण में मैंने उनके सामीप्य को अनुभूत किया है । वे जहां भी होंगे, मेरी इस सफलता पर निश्चय ही पुलकित हो रहे होंगे ।

किसी भी कार्य के पूर्णोन्मेषण सफल होने में कई प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष तत्व सहायक होते हैं । प्रस्तुत विषय के चयन एवं उसपर शोध-प्रबंध लिखने की प्रेरणा मुझे श्रीमती नाथी दामोदर ठाकरसी महिला विश्वविद्यालय, बम्बई की हिन्दी विभाग की रीडर एवं अध्यक्ष, `विद्याददाति विनयम्` की प्रत्यक्ष मूर्ति

डा॰ उमा शुक्ल से मिली है । उन्होंने ही इस शोध-प्रबंध का आद्योपान्त निर्देशन किया है । समय-समय पर मिले मार्गदर्शन, सहयोग, प्रेरणा, प्रोत्साहन - ये ही तत्व हैं जिन्होंने मेरी जिज्ञासा व लगन को सदा बनाये रखा । उसे कभी कुंठित नहीं होने दिया । अत: आदरणीय शुक्लजी की मैं आभारी हूं । जानती हूं उनके प्रति शब्दों में यह आभार-प्रदर्शन संभव हुआ है मात्र औपचारिकता निभाने में ही ।

अंत में मैं उन समस्त विद्वानों, विचारकों और शास्त्रज्ञों के प्रति आभार व्यक्त करती हूं जिनकी पुस्तकों का विषय-विवेचन के प्रसंग में यत्किंचित् उपयोग हुआ है । उन समस्त पुस्तकालयों के प्रति भी कृतज्ञ हूं जहां-जहां से मुझे विषयोचित सामग्री उपलब्ध हो सकी ।

आधुनिक युग में बढ़ती हुई असमानता को देखकर ऐसा लगा कि निराला भी इसी कारण विक्षिप्त हुए थे । उनके विक्षिप्त तक के गद्य-साहित्य में समाजवादी चिन्तन की भरमार है; और इसीलिए मैंने इस प्रबंध में समाजवाद को लिया जिसमें समाज-जीवन के परिप्रेक्ष्य में विचार व्यक्त हुए हैं । यही इस शोध-प्रबंध का संपूर्ण कलेवर है जिसे एक विनम्र प्रयास के रूप में प्रस्तुत कर रही हूं ।

— श्रीमती ललिता वि॰ जोगड़

बम्बई.
अप्रैल, १९८१